गोवंश आधारित अर्थव्यवस्था

सुनील मानसिंहका
गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र,
देवलापार, नागपुर.

ALLPPT.com _ Free PowerPoint Templates, Diagrams and Charts

पूर्वी सिर्फ भारतीय नस्ल की ही गोवंश था ।

वर्तमान – जर्सी या जर्सी से क्रास संख्या अधिक

- पूर्वी भारतीय गोवंश की नस्लें 100 से अधिक थी ।
- वर्तमान में 47 उपलब्ध है ।
- उन प्रकारों में से अधिकतम नष्ट होने की कगार पर है ।

गोवंश की समग्र उपयोगिता (पंचगव्य)

- देशी गाय से प्राप्त पाच घटक गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र और गोमय (गोबर) को सम्मिलित रूप से पंचगव्य कहते है।

आध्यातमिक

पर्यावरण

बहुआयामी पंचगव्य

कृषि

प्शु चिकित्सा

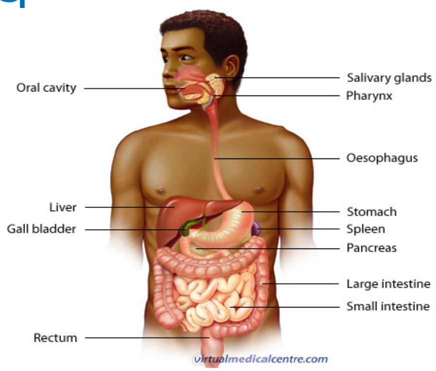

मानव चिकित्सा

बिना दूध के गोवंश से रोजगार

गोविज्ञान की उपयोगिता

क्रं	देशी नस्ल के गव्य पदार्थ	कृषि (गोवंश आधारित कामधेनु कृषि)	पंचगव्य आयुर्वेद औषधि उत्पाद (५० के लगभग) कुछ महत्वपूर्ण नाम नीचे दिए है।	रोजमर्रा के उत्पाद	गोबर से बने उत्पाद	
१	दूध	गोमूत्र	गोमूत्र अर्क	मंजन	मच्छर कॉईल	गोबर कंडो से अग्निहोत्र
२	दही	केंचुआ खाद	घनवटी	साबुन	फिनाइल	गोबर से ज्वेलरी बॉक्स
३	घी	कीटनियंत्रक	आसव	शॅम्पू	डिस्टेपर	गोबर से पेन होल्डर
४	छाछ	अमृतपानी	हरड़े चूर्ण		बर्तन पावडर	गोबर से टेबल घड़ी
५	पनीर	गोबर वृद्धि संवर्धक	मालिश तेल		मंजन	गोबर से फ्लॉवर पॉट
६	मक्खन	गो अमृतम पंचगव्य (कृषी हेतु)			हर्बल शॅम्पू	गोबर से लेटर बॉक्स
७	मिठाईयाँ		दवाखाना		फेस क्रीम	गोबर से धुप
८	खोवा/मावा		अस्पताल (रोगी को भरती करने की व्यवस्था)		शेविंग क्रीम	गोबर से मंदिर
					गोबर गॅस	गोबर से तोरण
					प्लास्टर / ईट	गोबर से खपरेंल
क्रं	नस्ल संवर्धन	जैविक कृषि उपज	ऊर्जा	जैविक खाद्यान्न से पदार्थ बनाना	बिजली	गोबर कंडो से अंतिम संस्कार
१	सांड	फल	गोबर गॅस सिलेंडर में भरना	टमाटर सॉस	ऑल आऊट लिक्विड	प्रतीक चिन्ह (Mementos)
२	गोवंश/गाय	फुल	बिजली	रस / शरबत	मोबाईल चिप	
					रोप वाटिका के कप	
३	बैल जोड़ी	सब्जी		पेय...आदि	टाईल्स	
		अनाज			सींग खाद	
		तिलहन दलहन मसाले			समाधि खाद	
		जड़ी बूटी			खाद्य सुरक्षा गोली, साबन	
		कपास			गमले /मुर्तियाँ	
		घास/चारा			गोबर से पेपर	

गीर गो-कृपा अमृतम

(बैक्टीरिया और कल्चर)

बंसी गीर गोशाला

गीर गो-कृपा अमृतम एक प्राकृतिक गौ आधारित द्रव्यों और अन्य औषधियों से बना मिश्रण है, जो हमारे विस्तृत संशोधन का परिणाम है।

गीर गो-कृपा अमृतम के लाभ (संक्षिप्त में) -

१) धरती में मित्र सूक्ष्म कीटाणुओं का संचार करता है - वनस्पति की रोग प्रतिकारक शक्ति और गुणवत्ता बढ़ता है।

२) वनस्पति को सुपाच्य स्वरूप में पोषक तत्त्व उपलब्ध कराता है और केचुओं की वृद्धि करता है।

३) धरती ज़्यादा नरम बनती है - बारिश का पानी ज़्यादा अच्छी तरीके से सोख लेती है - और समय के साथ खेती में पानी की ज़रूरत कम होती है। धरती में भूजल का प्रमाण बढ़ता है।

४) किसान कम से कम खर्च कर के स्वाभिमान से गौ आधारित खेती कर सकता है। यह सभी प्रकार की फसलों में बहोत उपयोगी है।

गीर गो-कृपा अमृतम भारत के किसानों को निःशुल्क दिया जा रहा है। अगर इस उत्पाद के लिए कोई धन राशि लेता है तो हम कानूनी कार्यवाही करेंगे। हम किसानों को बिनती करते हैं की गीर गो-कृपा अमृतम का उपयोग अपनी ज़मीन के एक भाग में करें। उसके परिणाम देखने के बाद अपनी बाकि की ज़मीन पर इसका प्रयोग करें। इस उत्पाद के उचित प्रयोग से कोई हानि नहीं है। और इसका प्रयोग आप दुसरी प्राकृतिक खेती की पद्धतिओं के साथ भी कर सकते हैं।

गीर गो-कृपा अमृतम दिव्य गोमाता की कृपा है। हमारी नम्र बिनती है की हम इस वास्तु का प्रयोग गोमाता को वंदन करके करें और समृद्ध बनें।

गीर गो-कृपा अमृतम से बने द्रावण की विशेषताएं

हरित क्रांति के पहले १९७० में १ ग्राम मिट्टी में २ करोड़ उपयोगी सूक्ष्म जीवाणु मिलते थे। पर अब मात्र 20% भी नहीं बचे हैं। चाहे मानव शरीर हो या धरती, यह मित्र सूक्ष्म कीटाणु स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक हैं।

गीर गो-कृपा अमृतम में ४० से अधिक अलग अलग प्रकार के मित्र बैक्टीरिया (मित्र सूक्ष्म कीटाणु) हैं जो धरती में प्रवेश करके अपने आप फैलने लगते हैं। इन में -

- ४-६ प्रकार के बैक्टीरिया ऐसे हैं जो रोग नियंत्रक और किट नियंत्रक का काम करते हैं।
- ४ प्रकार के बैक्टीरिया ऐसे हैं जो हवा में से नाइट्रोजन ले कर सुपाच्य स्वरूप में जड़ों को उपलब्ध करते हैं। इस लिए किसानों का यूरिया में खर्च बच जायेगा।
- ६ बैक्टीरिया ऐसे हैं जो वैज्ञानिक भाषा में जिओ बैक्टीरिया कहते हैं। यह बैक्टीरिया गोमय, गोमूत्र और धरती में रहे धातु और खनिज पदार्थों को सुपाच्य स्वरूप में जड़ों को उपलब्ध करते हैं।
- ६ बैक्टीरिया ऐसे हैं जो खाद को कम्पोस्ट करने का कम करते हैं।
- लैक्टोबैसिलस बैक्टीरिया जो पौधे और फल के विकास में अच्छा कार्य करते हैं।
- फॉस्फोरस पे काम करने वाले बैक्टीरिया जो फॉस्फोरस को सुपाच्य रूप में पौधे को उपलब्ध करते हैं।
- बहोत बैक्टीरिया ऐसे हैं जो वनस्पति को अच्छी तरह से विकसित होने और बेहतर फल देने में मदद करते हैं।

गिर गो-कृपा अमृतम का खेत में उपयोग करने के लिए द्रावण तैयार करने की विधि -

- २०० लीटर पानी लीजिये। इसमें १-2 लीटर गिर गो-कृपा अमृतम मिलाइये।
- इसमें १-२ किलो गुड़ और १-२ किलो देसी गाय से प्राप्त हुई ताज़ी छाछ मिलाइये।
- ऊपर का मिश्रण कोई पेड़ के निचे सूती कपडे से ढक कर रखें (ताकि हवा आ-जा सके)

- ५-७ दिनों के अंदर २०० लीटर जितना द्रावण तैयार हो जायेगा।

* ५ दिन तक दिन में एक बार डंडे से क्लॉक वाइज़ (घडी की दिशा में) धीरे से ५-७ बार हिलाएं।

जब द्रावण ख़तम होने लगे या आधा हो जाये तो ऊपर समजायी गई विधि के अनुसार आप उसमें १-२ किलो गुड़, १-२ लीटर देसी गाय से प्राप्त हुई ताज़ी छाछ और बाकि का पानी मिला कर दूसरा द्रावण तैयार कर सकते हैं।

यह द्रावण एक एकर में १००० लीटर तक फसल में पानी के साथ (ड्रेंचिंग) या ड्रिप और फुवारे पद्धती से प्रयोग कर सकते हैं। जितना ज़्यादा बैक्टीरिया धरती माता को प्राप्त होगा उतना ज़्यादा फसल के लिए लाभ दायी होगा।

अब आपको अगले ३ साल तक साल में एकाद बार द्रावण का मधर कल्चर यानि की गीर गो-कृपा अमृतम बदलना होगा। उसके पश्चात आपके पास भी उत्तम गुणवत्ता वाला मधर कल्चर तैयार हो जायेगा।

विशेष सूचना -

१. गीर गो-कृपा अमृतम में रहे मित्र सूक्ष्म कीटाणुओं को देसी गाय का ही छाछ, गोबर और गोमूत्र पसंद है। इस लिए भैंस या विदेशी गाय के गोबर का इस्तेमाल नहीं करना है। आपको देसी गाय के पंचगव्यों के साथ सबसे उत्तम परिणाम मिलेंगे। इस लिए हमारी बिनती है की अगर आप के पास देसी गाय नहीं है तो किसी गौशाला से देसी गाय का खाद खरीद कर इस्तेमाल कीजिये। और अगर आप देसी गाय रखते हैं तो उसे ज़्यादा सरलता से संभाल सकेंगे। आप की यूरिया और DAP सब्सिडी से आप गाय के लिए दाना (कंसन्ट्रेट फीड) खरीद सकते हैं। आप वीडीसाइड का उपयोग न करके पाक के बीच उग रहे जंगली घास अपनी गाय को खिला सकते हैं। और गो-कृपा अमृतम बैक्टीरिया का उपयोग करके गाय के गोबर और गोमूत्र से आप उत्तम गुणवत्ता का खाद और कीटनाशक द्रव्य का निर्माण खुद ही कर सकते हैं।

२. किसान भाइयों से बिनती है की वह गो-कृपा अमृतम का उपयोग अपनी ज़मीन के एक हिस्से में करे, और उसके परिणाम के अनुसार बाकि की ज़मीन में उपयोग करना शुरू करे। उदाहरण स्वरूप, अगर आप के पास २० एकर ज़मीन है तो पहले आप आधे एकर ज़मीन में उपयोग करें। अगर आप को सफल परिणाम प्राप्त हो तो बड़े पैमाने पर गाय रख कर स्वाभिमान के साथ स्वनिर्भर हो कर खेती करें।

गीर गो-कृपा अमृतम से खाद कैसे बनाएं?

देसी गोमाता का ताज़ा गोबर का २ फुट ऊंचा और ५ फूट चौड़ा ढेर करें और किसी पेड़ या अन्य छाव के निचे उसकी लम्बी लाइन करें। इस पे ऊपर दी गयी विधि के अनुसार तैयार किये गए २०० लीटर द्रावण में से १०-15 लीटर का छिटकाव करें (इस से ज्यादा लिया तो भी कोई हानि नहीं है)। अब इस ढेर में ड्रिप से या नियमित छिटकाव से नमी बनाये रखें। इस से लगभग ४०-४५ दिनों में उत्तम गुणवत्ता का खाद तैयार हो जायेगा। इस खाद का सभी प्रकार की फसल में अवश्य उपयोग करें जिस से आपको बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

गीर गो-कृपा अमृतम का कीटनियंत्रक की तरह कैसे उपयोग करेंगे?

- २०० लीटर में से २ लीटर द्रावण लें। बराबर साफ किये पंप में बाकि का पानी मिलाइये।
- इस मिश्रण का ५ दिन में एक बार नियमित छिटकाव कीजिये। इस से उत्पाद में रोग न आ सके ऐसी परिस्थिति का निर्माण होगा, और अगर आये भी तो उसे नियंत्रित करना ज़्यादा सरल होगा।

विशेष सूचना

१) खेत में डांगर, गेहूं और अन्य फसल लेने के बाद फसल के बाकि का हिस्सा जलाया जाता है वह न करके रोटरी के माध्यम से खेत में मिला देंगे तो वह बैक्टीरिया का खुराक बनकर अच्छी खाद बनेगा, किसान को अच्छा फायदा होगा और प्रदुषण भी नहीं होगा।

२) बैक्टीरिया की बोतल रस्ते में ले जाते समय हर दो घंटे इसका ढक्कन खोलते रहे जिस से बैक्टीरिया को हवा मिलती रहे और ज़िंदा रहे। घर जा कर बैक्टीरिया की बोतल तुरंत खोल दे और बनाते समय उपयोग में लेने वाले साधन (ड्रम) सही तरह साफ करके उपयोग करें।

बंसी गीर गोशाला

बंसी गीर गोशाला, मेट्रो होलसेल सर्विस लेन, शांतिपुरा चौराहा, सरदार पटेल रिंग रोड, कर्णावती (अहमदाबाद-३८२२१०), गुजरात, भारत
Ph.: 7990862252 / 8840621871 / 9377256750.

info@banigir.in www.bansigir.in bansigirgaushala bansigir

गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार, नागपूर.

प्रधान कार्यालय - घटाटे वाडा पं. बच्छराज व्यास चौक चितार ओली, महल, नागपुर - ३२

फोन - ०७१२ - २७७२२७३/२७३४१८२, fax :२७२१५८९(pp)

Email - gauvigvan@gmail.com, gauseva@yahoo.co.in

Kamdhebu Gomutra Ark

कामधेनु गोमूत्र अर्क

गोमूत्र : गोमूत्र कसैला, कडवा, तीखा पाचनमें हल्का, क्षारीय, उष्ण, तीष्ण, पाचक, अग्निदीपक, मल का भेदन करने वाला, पितल, मेघाकारक किंचित मधुर, सारक, लेखन, बुद्धिप्रद एवं कफ, वायु, कुष्ठ, गुल्म, उदररोग, पांडुरोग, किलासकुष्ठ, शुल, अर्श, खुजली, श्वास, आम ज्वर, अनाह-वायु, कास, मलस्तंभ, अरोचक, शोथ, मुखरोग, नेत्ररोग, त्वगदोष, महिलाओ का अतिसार, मूत्रावरोध इनका नाश करता है। इतने अधिक गुणधर्म गोमूत्र में हैं।

- निघण्टुरत्नाकर (गुणदोष पान नं. ३४१)

कामधेनु गोमूत्र अर्क : निम्नलिखित रोगो में उपयोगी

१. मूत्र रोग (मूत्रकृच्छाता रुक रुक कर पेशाब होना)
२. अश्मरी (पथरी / Urine stone, gall stone)
३. मेदोरोग मोटापा / obesity)
४. वृक्क विकार (Diseases of excretory system / गुर्दे का रोग)
५. त्वचा विकार (चमडी के रोग / skin disease)
६. पाण्डु (Anemia / रक्ताल्पता)
७. पाचन संस्थान सम्बन्धी विकार (अपचन, अजीर्ण)
८. रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने में मदत करता हैं
९. यह कर्करोग तथ क्षयरोग विरोधी है
१०. यह प्रभावी रक्तरोधक है
११. यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर नियंत्रित करता है।

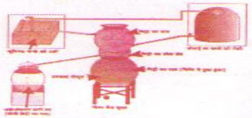

मात्रा : १० से १५ मिली अर्क इतने ही पानी में ले या ५ मिली. शहद मे मिलाकर दो बार ले।

१. गोमुत्र में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के प्रोटीन रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते है।
२. गोमूत्र में उपस्थित कुल फिनोल, पैरा क्रिसॉल, कैटेकोल, ओरसीनोल, हैलोजेनेटेड फिनोल एवं फिनाईल का मिश्रण है। ये सभी तत्व जीवाणूनाशक, विषाणूनाशक, कवक नाशक होते है अत: इनकी उपस्थिती में गोमूत्र एक अत्यंत प्रभावी एन्टीबायोटीक के रुप में विभिन्न संक्रामक रोगोंपर उपयोगी है।
३. युरीक एसिड, युरिया क्रिएटिनीन, एवं लेक्टेट सामान्य देह ऊर्जा को उत्पन्न करने वाले पदार्थ उपस्थित है।
४. शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए लगने वाले विटामिन्स उसमें उपस्थित है।
५. गोमूत्र में उपस्थित विभिन्न प्रकार के एन्जाइम्स पाचन क्रिया एवं ऊर्जा उत्पादन में सहायक है।
६. शरीर की संरचना जैसे अस्थियाँ, दात, केश आदि के लिए खनिज लवणा की भूमिका आवश्यक है।
७. गोमूत्र में कॅन्सर रोधी क्षमता भी होती है। इसका कारण गोमूत्र में पाये जाने वाले विभिन्न अँन्टी ऑक्सीडेंट तत्व है। जो कॅन्सर कारक पदार्थो में प्रमुख मुक्त सक्रिय आर्यन फ्रो रेडिकल्स को नष्ट करने की क्षमता रखते है।
८. विटामीन सी, विटामीन इ, विटामीन ए आदि प्रमुख अँटी ऑक्सीडेंट है। इनके अलावा गोमूत्र में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के इन्टरफेरीन प्रोटीन एवं इम्युनोस्टीम्युलेटर प्रोटीन भी कॅन्सर के उपचार एवं रोकथाम में सहयोगी भूमिका निभाते है।

(उत्तर प्रदेश पण्डित दिनदयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो-अनुसंधान संस्थान, मथुरा.)

Go Vigyan Anusandhan Kendra, Deolapar, Nagpur has 6 registered patents with CSIR (Government of India)

1. **US Patent No. 6410059, June 25, 2002 :** Pharmaceutical composition containing cow urine Distillate and for Antibiotic Antifungal, Bioenhancer effect of Gomutra.
2. **US Patent No 6896907, May 24, 2005 :** Use of bioactive factor for cow urine distillate as bio enhancer of Anti Allergic, anti-infective, Nutrient, Anticancer Agent.
3. **China Patent No. 100475221 :** For protecting and reparing DNA from oxidative damages.
4. **US Patent No. 7718360 :** For Antioxidant Apoptosis.
5. **US Patent No. 7297659 :** For synergistic fermented plant growth pormoting, bio-control composition.
6. **US Patent No. 7235262 :** For cow urine distillate as a Bio-enchancer of Anti-infective, Anticancer Agents & Nutrients.

कृषि

जैविक कृषि वह पध्दति है जिसमें प्रकृति के भाषा के आधारपर पर्यावरण के समस्त घटकों जल, जंगल, जमिन, जानवरों के हितो को ध्यान में रखते हुए मानव हित के लिए खेती करते है। इस पध्दति में ग्राम परिसर में उपलब्ध संसाधनो का उपयोग किया जाता है। यह बीज से बाजार तक पूर्ण स्वावलंबन की खेती है।

गोमूत्र मे उपस्थित जैव रासायनिक तत्व

नं	रासायनिक तत्वों के नाम	मात्रा
१	प्रोटीन	०.१०३७ ग्रा प्रति लि
२	युरिक ऐसिड	१३५.०२८ मि.ग्रा प्रति लि
३	क्रियेटीनीन	०.९९७० ग्रा प्रति लि·
४	लेक्टेट	३.७८३०मिली मोल प्रती लि.
५	फिनोल कुल	४.७५८० मिली ग्रा प्रती १०० मिली
६	मुक्त उडनशील फिनोल	०.७१३० मि.ग्रा. प्रति लि.
	संयुक्त उडनशील फिनोल	१.३४२०मिग्रा/१०० मिली
	एरोमेटीक हायड्रॉक्सी एसीड	२.७०३० मिली ग्राम/१०० मिली
७	विटामीन	२१६.४०८ मिग्रा प्रति लि
	विटामीन सी	
	विटामीन बी १	४४४.१२५ माइक्रोग्राम प्रति लि
	विटामीन बी २	०.६३३९ मि ग्रा प्रति ली
८	एन्जाइम्स	
	लेक्टेट डिहायड्रोजेनेज	२१.७८० युनिट प्रति ली
	अल्कालाइन फोस्फोटेज	११०.११० के ऐ युनीट
	एसीड फोस्फोटेज	४५६.६२० के ऐ युनीट
	अमायलेज	९०.२३६ युनीट
९	खनिज तत्व मिनरल्स	
	कैल्सीयम	५.७३५ मिली मोल प्रति ली
	फास्फोरस	०.४८०५ मिली मोल प्रति ली

गोमूत्र मे पाये जाने वाले रासायनिक तत्वों की शरीर के लिए उपयोगिता

१ गोमुत्र मे पाये जाने वाले विभीन्न प्रकार के प्रोटीन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढाती है।

२ यूरीक एसीड, युरीया क्रियेटीनीन, एवं लेक्टेट सामान्य देह उर्जा को उत्पन्न करने वाले पदार्थ है।

३ गोमूत्र मे उपस्थित कुल फिनोल, पैरा क्रिसॉल, कैटेकोल, ओरसीनोल, हैलोजेनेटेड फिनोल एवं फिनाईल फिनोल का मिश्रण होता है। ये सभी तत्व जीवाणूनाशक, विशाणूनाशक, कवक नाशक होते है। अत: इनकी उपस्थिती मे गोमूत्र एक अत्यंत प्रभावशाली एन्टीबायोटीक के रूप मे विभीन्न संक्रामक रोगोंपर उपयोगी है।

४. शरीर मे होने वाली विभीन्न रासायनिक क्रियाओं के लिए विटामीन्स एक महत्वपूर्ण सहकारक की भूमिका अदा करते है। अत: शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढाने के लिए इनकी भूमिका अनिवार्य है।

५ गोमूत्र मे उपस्थित विभीन्न प्रकार के एन्जाइम्स पाचन क्रिया एवं ऊर्जा उत्पादन मे सहायक है।

६. शरीर की संरचना जैसे अस्थियाँ, दांत, केश आदी के लिए खनिज लवणों की भूमिका आवश्यक है। इसके अलावा विभीन्न जैवीक क्रियाये जैसे पेशीय संकुचन, तंत्रिका, आवागमन, उर्जा उत्पादन, दुग्ध उत्पादन आदि मे खनिज लवण एक महत्वपूर्ण सहकारक के रूप मे प्रयुक्त होते है।

अत: गोमूत्र मे इन तत्वों की उपस्थिती रोगों के प्रति सुरक्षा कवच प्रदान करती है।

७ गोमूत्र मे कॅंसर रोधी क्षमता भी होती है। इसका कारण गोमूत्र मे पाये जाने वाले विभीन्न अँन्टी ऑक्सीडेंट तत्व है। जो कॅंसर कारक पदार्थो मे प्रमुख मुक्त सक्रीय आयर्न फ्रि रेडीकल्स को नष्ट करने की क्षमता रखते है।

विटामीन सी, विटामीन इ, विटामीन ए आदी प्रमुख अँटी ऑक्सीडेंट है।

इनके अलावा गोमूत्र मे पाये जाने वाले विभीन्न प्रकार के इन्टरफेरोन प्रोटीन एवं इम्युनोस्टीम्युलेटर प्रोटीन भी कैंसर के उपचार एवं रोकथाम मे सहयोगी भूमिका निभाते हैं।

गोमुत्र से नष्ट होने वाले रोग

सुश्रुत संहीता सूत्र स्थान के पैतालिसवे अध्याय के अनुसार गोमूत्र शिघ्र पाचक, मस्तिश्क के लिए शक्तीवर्धक, कफ वात हरने वाला, नेत्र रोग, कुष्ठ रोग, अतिसार, सफेद दाग, कब्ज, दस्त, कृमिनाशक, खून की कमी, दमा, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, कैंसर आदि मे उपयुक्त है।

अजमुत्र और गोमुत्र की तुलना

इस महाविद्यालय के प्रयोगशाला मे हुए शोध के अनुसार अजमूत्र मे वे सभी रासायनिक तत्व उपस्थित है, जो गोमूत्र मे पाये जाते है। किंतु अपेक्षाकृत अजमुत्र मे इनकी मात्रा कम होती है।

अधिक जानकारी ....
जीव रसायन विज्ञान विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं गो अनुसंधान केंद्र, मथुरा – २८१००१.

कामधेनु
KAMDHENU CHANDAN DHOOP BATTI
कामधेनु
उबटन
Ubatan
कामधेनु
धूप (बत्तियाँ)
KAMDHENU DHOOP BATTI
कामधेनु
Gomayadi Lepa Tikiya
Panchagavya Ghrut
Hingvadya
कुष्मांडावलेह
Kushmandavaleha
Ayurvedic Medicine
दंतमंजन
Dantamanjan
KAMDHENU
HARDE CHURNA
गोमूत्र
आसव
Gomutra
AASAWA
Shake well before use
कामधेनु
गोमूत्र
अर्क
Kamdhenu
Gomutra
Ark
TAKRARISHTA
MEDOHAR ARKA
Kamdhenu
फलघृत
Ayurvedic Medicine

पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा

Before	After

गोवंश आधारित कृषि

श्री. नेतराम देशमुख यांचे फोटो मु. शहपी, पो. काजळी, ता. कारंजा घाडगे, जि. वर्धा

गोवंश आधारित कृषि

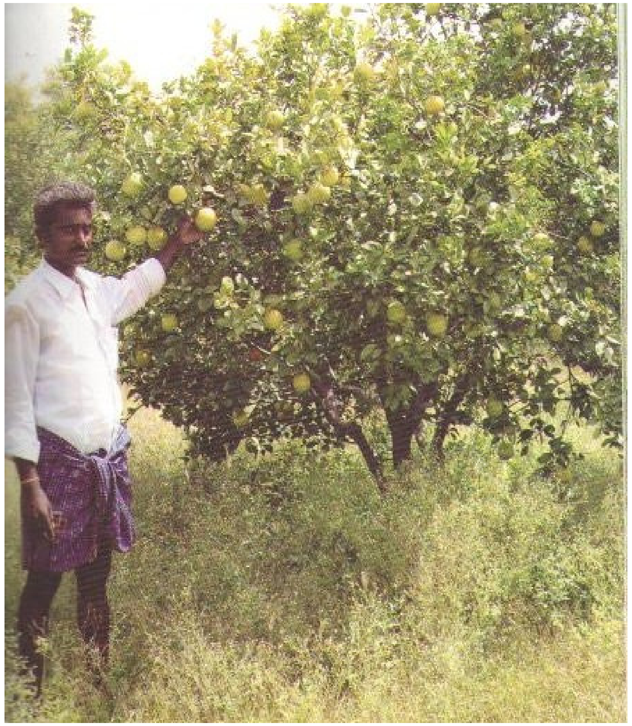

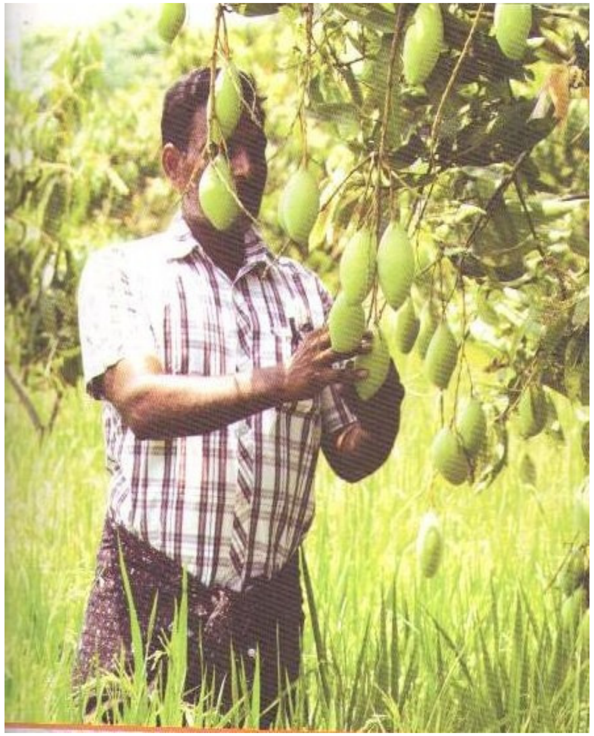

गोवंश अधारित प्रशिक्षण
गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र,
देवलापार, नागपुर.
अडानी फाउंडेश, तिरोडा

गोवंश आधारित अर्थव्यवस्था

गोबर और गोमूत्र से उपजाऊ उत्पादों को बनाने के लिए महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। गोबर और गोमूत्र का प्रभाव ढंग से उपयोग करने वानी महिलाओं की किसानों की भागीरदारी बढ जाती है। महिलाएं विशेष रूप से धान की खेती के मौसम में किसानों को जैविक कीटनाशक बना रही हैओर इसे किसानों को बेच रही है। कुल 503 महिला किसान वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर रह है। वर्मीकम्पोस्ट के उत्पादन की मात्रा 30 क्विंटल वर्मीकम्पोस्ट प्रति एकड़ की दर से वर्मीकम्पोस्ट को बेचकर वे रूपये की वार्षिकआय अर्जित कर रहे है 12,000-14,000/-

adani
Foundation
श्री पध्दतीने सेंद्रिय भात लागवड कार्यक्रम
'सेंद्रिय खते व किट नियंत्रक
अदानी फाऊंडेशन, तिरोडा

कमिन्स व गोविज्ञान संशोधन संस्था

कमिन्स व गो विज्ञान संशोधन संस्था संचलित

आदर्श ग्राम वृत्तपत्र

त्रैमासिक अंक ३ सप्टेंबर २०१९

गो विज्ञान संशोधन संस्था

संपर्क : महेश वंडकर
९९२२२४३६५३
मेल : govidnyan.ss@gmail.com

- प्रस्तावना
- कृषी विभाग
- परदेशी पाहुण्यांची भेट
- गो–आधारीत सेंद्रिय शेती प्रकल्पास कामधेनू आयोगाच्या प्रतिष्ठित व्यक्तींची भेट
- पंचगव्य उत्पादन प्रशिक्षण
- शेतकऱ्यांच्या मुलाखती
- पंचगव्य चिकित्सा केंद्र
- पुढचे पाउल पुढे चालले ...
- अमृत पाणी व ते तयार करण्याची कृती
- बीज संस्कार

Initiative Supported by
Cummins India Foundation

गो–आधारीत सेंद्रिय शेती प्रकल्पास कामधेनू आयोगाच्या प्रतिष्ठित व्यक्तींची भेट

श्री. सुनील मानसिंहका (सदस्य: राष्ट्रीय कामधेनु आयोग, भारतीय जीव जंतु बोर्ड, राष्ट्रीय पंचगव्य अनुसंधान समिती) यांनी दि. ०५.०८.२०१९ रोजी नांदल, तालुका–फलटण, जिल्हा – सातारा, येथे कमिन्स व गो–विज्ञान संस्था यांच्या सहकाऱ्याने चाललेल्या गो–आधारीत शेतीच्या कामाची पाहणी केली. ह्या प्रसंगी श्री प्रशांत चितळे यांनी गो–आधारीत (अर्थात सेंद्रिय) शेती मुळे संपूर्ण राष्ट्राला कसा फायदा होऊ शकतो व लोकांचे आरोग्य कसे सुधारू शकते ते दाखविले. यावेळी नांदल येथे वृक्षारोपण करण्यात आले संस्थेकडून यावेळी श्री बापू कुलकर्णी, श्री अनिल व्यास, श्री सांबरे, श्री सतीश पारखी हे पदाधिकारी उपस्थित होते. श्री सुनिलजींनी गो–विज्ञान चे एप्रिल, २०१९ च्या छापलेल्या अहवालाची स्तुति केली.

फलटण कमिन्स मधील विक्री केंद्र

श्री. मानसिंहका यांच्या हस्ते गो–आधारीत शेती मधून उत्पादन झालेल्या धान्य व भाज्यांचे विक्री साठी कमिन्स, नांदल येथे स्टॉल चे उद्घाटन करण्यात आले, त्यामुळे शेतकर्यांना थेट बाजार उपलब्ध झाला व कमिन्स मधील कामगारांना सेंद्रिय व रसायनविरहित धान्य व भाज्या मिळू लागल्या आहेत. शेतकऱ्यांना शेती मालासाठी बाजार मिळाल्यामुळे शास्त्रीय सेंद्रिय शेती करण्याकडे शेतकऱ्यांचा कल वाढणारा आहे व हे एक गो–विज्ञान व कामिन्स यांचे एकत्रित पणे केलेल्या कामाचे यश म्हणावे लागेल.

कामिन्स कंपनीच्या फलटण येथील एक्काने / घटकाने SMART UP (Sustainable Market For - griculture Rural Transition and UP-gradation of people) या नावाने एक कार्यक्रम राबवण्याचे ठरविले आहे. त्यात कंपनीच्या माध्यमातून Smart Village कार्यक्रमांतर्गत शिकविल्या जाणाऱ्या गो–आधारीत सेंद्रिय शेती प्रयोगातून निर्माण होत असलेल्या शेती मालाला कंपनीत बाजारपेठ उपलब्ध करून देण्याचा विचार आहे. त्यामुळे कंपनीतील कामगार / कर्मचाऱ्यांना चांगले सेंद्रिय उत्पादन योग्य दरात मिळेल व शेतकऱ्यांना पण योग्य भाव मिळेल असा दुहेरी उद्देश आहे. याचा उदघाटन सोहळा दि. ०५.०८.२०१९ रोजी कंपनीच्या फलटण एक्कात श्री. सुनील मनसिंहका यांच्या हस्ते पार पडला.

गेल्या तीन महिन्यांपासून आठवड्यातून एकदा असे विक्री केंद्र चालवले जात आहे. त्यामुळे शेतकऱ्यांचा उत्साह वाढत आहे.

करवासा येथिल तयार गव्हाचे शेत

इंदूर जवळील राजोदा व पिथमपूर परिसरातील करवासा या गावात संस्थेने कमिन्स इंडिया फौंडेशनच्या सहकार्याने २०१८च्या ऑगस्ट महिन्यात कामाला सुरुवात केली. या परिसरात हा विषय प्रथमच लोकांनी ऐकल्याचे जाणवले. केवळ १०–१५ किलो शेण व २–३ लिटर गोमूत्रावर एक एकर शेती होवू शकते, हे पटायलाच अनेक भेटी आणि संपर्क करावा लागला. प्रशिक्षण घेवून समजवावे लागले.

अमृत पाणी व ते तयार करण्याची कृती

शेतातील कर्ब प्रमाण वाढवण्यासाठी व जमिनीची सुपीकता चांगली करण्यासाठी अमृत पाणी वापरणे फार उपयोगी ठरत आहे. जमिनीतील जीवाणू संख्या वाढवणे व त्यातून जमीन कसदार करण्यासाठी अमृत पाण्याचा उपयोग शेतकऱ्यांनी करणे आवश्यक आहे.

१० किलोग्राम गोमय (गायीचे शेण) घेऊन त्यास २५० ग्राम (पाव किलो) देशी गायीचे तूप चोळावे व त्यानंतर त्यामध्ये ५०० ग्राम (अर्धा किलो) मध चोळावे ह्या सर्वांचे मिश्रण २०० लिटर पाण्यात घेऊन त्याची रबडी करावी. हे आहे अमृत पाणी. २०० लीटर अमृत पाणी १ एकर जमिनीस पुरेसे होते.

बीज संस्कार

बीज संस्कार कसे करावेत ?

बीज सशक्त असेल तर रोपे सशक्त येतील व त्यावर किडीचा प्रादुर्भाव खूपच कमी होईल. हे करण्यासाठी बीज संस्कार आवश्यक आहेत. अमृत पाण्याचा उपयोग करून बीज संस्कार केल्यास चांगले पीक येते व उत्पन्नात ही वाढ दिसते. बीज प्रक्रियेसाठी शेतकऱ्यांनी खाली वर्णन केल्याप्रमाणे बीज संस्कार करावेत

बीज सजीव आहे. बीज संस्कार बीयाण्याच्या प्रकारानुसार ते वेगवेगळ्या पद्धतीने करावेत.

अ) कठीण कवचाचे बी (गहू, जोंधळा, भात, कापूस)
अमृत पाण्यात थोडी वडाच्या झाडाखालची माती घालून हे मिश्रण बीयाण्याच्या सुपात घालून ते घोळून घ्यावे नंतर ते सावलीत वाळवून योग्य वेळी पेरावे.

ब) साल सहज निघेल असे बीयाणे (तूर, हरभरा, सोयाबीन, वाल, मूग)
बीयाणे सुपात घेऊन त्यावर अमृतपाणी शिंपडावे व वाळल्यावर लगेच पेरावे.

क) कंद / कांडी स्वरुपातील बीयाणे(मिरची, कांदा, कोबी, तंबाखू)
गादी वाफ्यावर आंगारा टाकावा, त्याला अमृत पाणी द्यावे व बीयाण्याची रोपे करून घ्यावीत. पुनरलावणीच्या वेळी रोपांची मुळे अमृत पाण्यात बुडवून मग ती लावावीत.

ड) गादी वाफ्यावर रोपे करवयाची बीयाणे (हळद, ऊस, आले, बटाटा)
यात आंगारा जमिनीवर टाकावा व बियाणे अमृत पाण्यात बुडवून ते वाळवून मग लावावे.

शेतकऱ्यांच्या मुलाखती

गो आधारीत शेती करणाऱ्या शेतकरी भगिनीची मुलाखत खाली देत आहे.

नमस्कार,
मी, वैशाली शिंदे रहाणार देवगाव,

मी दोन वर्षे गोविज्ञान संशोधन संस्था,पुणे व कमीन्स यांच्या सहकर्याने शास्त्रीय सेंद्रिय शेती करीत आहे. मला पहिल्यांदा मनामध्ये खूपच भीती वाटत होती की रसायनांचा वापर न करता शेती चांगली येईल का नाही... ? परंतु मी मनावर घेतले की शास्त्रीय सेंद्रिय शेती करून बघायचीच. त्यानंतर मला रासायनिक व सेंद्रिय यामधील फरक जाणवला... या मध्ये शेतीसाठी रसायनांचा वापर अजिबात केला जात नाही. त्यामुळे रसायने खरेदी करण्यासाठी लागणारा माझा पैसा वाचला म्हणजेच जो खर्च रु. १००००/- होता तो खर्च केवळ रु. ३००/- मात्र आला, तसेच बाजारात जाऊन रसायने आणण्यासाठी लागणारा वेळ वाचला. शास्त्रीय सेंद्रिय शेती पद्धतीमध्ये पंचगव्य वापरल्यामुळे आरोग्यवर्धक पिके,भाज्या,फळभाज्य मिळू लागल्या.

सेंद्रिय शेती पद्धतीने शेती केल्यामुळे कांदा, भाज्या, फळभाज्य यांचा रंगामध्ये व रासायनिक पद्धतीने केलेल्या शेती मध्ये खूपच फरक दिसला तो म्हणजे सेंद्रिय शेती पद्धतीने केलेल्या शेतीमधील भाज्या,फळभाज्या अधिक ताज्या, टवटवीत दिसू लागल्या व भाज्या तुलनात्मक रीत्या जास्त वेळ टिकू लागल्या. धान्य व भाज्या यांच्या चवीत खूपच फरक जाणवला. सेंद्रिय शेती पद्धतीने केलेल्या शेतीमधील भाज्या, धान्य चवदार लागले.

शास्त्रीय सेंद्रिय शेतीसाठी केवळ एका देशी गायीचीच गरज पडली. तिच्या पासून पंचगव्य मिळाले. गोमूत्रची फवारणी केल्यामुळे पिकाला कीड लागली नाही व रोपांची वाढ चांगली झाली. अर्थातच उत्पादन जास्त मिळू लागले.

मी गो-विज्ञान संशोधन संस्था, पुणे व कमीन्स यांची खूप आभारी आहे.

नांदल येथिल **श्री. तुकाराम साळुंके** यांनी गो-आधारीत शेतीमधला आपला अनुभव सांगितला आणि आलेल्या भरगोस भाजीपाला दाखवला. त्यांच्या अनुभव कथानातील महत्वाचे मुद्दे खाली दिले आहेत.

त्यांनी कांदा, मेथी, कोथिंबीर, शेपू, मिरची, ई. पिके घेतली.

रासायनिक खाद्य दिल्याने जमिनीत गांडुळे दिसत नाहीत पण गो-आधारीत शेतीमुळे जमिनीतील गांडूळांची संख्या वाढते.

भाजीच्या मुळांची वाढ जास्त होते. त्यामुळे भाजीपाला सतेज राहतो.

रासायनिक पध्दतीने मेथी पिकवली असता २६ दिवस लागतात तर गो-आधारीत शेतीमुळे मेथी १९ दिवसात तयार होते..

गोसेवा परिवार

गोभक्ति सत्संग
गोग्रास संग्रह
गोशाला भ्रमण
गोबर-गैस प्लांट
गोबरी अंत्येष्टि

गोसेवा परिवार

गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

गो-आधारित ग्राम विकास
गो-ग्राम प्रशिक्षण वर्ग
गोग्राम यात्रा
वृक्षारोपण
वर्षाजल संरक्षण

गो-भक्ति सत्संग : गोसेवा परिवार का प्रारम्भ कोलकाता के कुछ गोभक्तों द्वारा नवम्बर 2014 में एक भव्य गो-भक्ति सत्संग से हुआ। गोमाता पर ऐसा विराट आयोजन कोलकाता शहर में पहली बार हुआ। इसी क्रम में मासिक गो-भक्ति सत्संग का आरम्भ हुआ जो आज तक अनवरत् चल रहा है। गो-सत्संग का उद्देश्य शहरवासियों में गोभक्ति का भाव जगाना और गोसेवा से जोड़ना है।

गोग्रास संग्रह : गोग्रास निकालने की विलुप्त होती परम्परा को बचाए रखने के लिए, घर-घर से **गोग्रास संग्रह** कर गोशाला पहुँचाना प्रारम्भ किया गया। 2016 से 2019 के बीच इस अभियान में **1500** से अधिक परिवार जुड़ चुके हैं और कुल **2,50,000** किलो से अधिक गोग्रास गोशाला पहुँचाया जा चुका है।

गोशाला भ्रमण : शहर में गाय के दर्शन संभव न हो पाने के कारण गोसेवा परिवार ने नियमित गोशाला भ्रमण का आयोजन किया। इससे समाज के लोगों में विशेषकर बच्चों में गोमाता के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होने लगी।

सेल्फी विथ गोमाता युवाओं को गोमाता के प्रति आकर्षित करने के लिए 2015 से गोपाष्टमी के अवसर पर 'सेल्फी विथ गोमाता' प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस अभिनव प्रयोग में प्रतिवर्ष देश-विदेश से हजारों लोग बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। इस वर्ष आयोजित इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने की अंतिम तिथि **31 दिसम्बर** है।

पंचगव्य उत्पाद एवं गो-साहित्य : विभिन्न गोशालाओं द्वारा निर्मित पंचगव्य उत्पादों का प्रचार-प्रसार भी किया जाता है। इसके परिणाम-स्वरुप आज कोलकाता के हजार से अधिक परिवारों में गोबर से बनी धूप, गोमूत्र अर्क, गोमूत्र से बनी गोनाइल आदि का उपयोग होने लगा है। समय-समय पर गो-साहित्य का प्रचार और प्रकाशन भी किया जाता है। अब तक **5** पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है।

किसान का घर : गोवंश का असली घर किसान का घर है। गोबर - गोमूत्र की उपयोगिता से अनभिज्ञ किसान गाय को सिर्फ दूध के लिए पालता है और दूध न देने पर उसे कसाई के हाथ बेच देता है। किसान गोवंश को न बेचे इसके लिए उसको गोबर-गोमूत्र की उपयोगिता सिखाने का निर्णय लिया गया। इस कार्य को प्रारंभ करने में हमें गो-विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, IIT खड़गपुर, विधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, कल्याणी एवं कई विशेषज्ञों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

गो-आधारित ग्राम विकास की पहली बैठक गोपाष्टमी के शुभ दिन 8 नवम्बर 2016 को बंगाल के पश्चिमी मेदिनीपुर के केशियारी खंड के एक गाँव में हुई। गो आधारित ग्राम विकास योजना के मुख्य रुप से पाँच आयाम हैं :-

1. गो-आधारित कृषि
2. गो-आधारित उर्जा
3. गो-आधारित मानव चिकित्सा
4. गो एवं कृषि आधारित ग्रामोद्योग
5. गोसंवर्धन एवं नस्ल सुधार

गोग्राम प्रशिक्षण वर्ग : शहर के कार्यकर्ताओं के नियमित प्रवास के साथ-साथ गाँवों में पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की नियुक्ति भी की गई। सर्वप्रथम 5 गाँवों से कार्य का प्रारम्भ किया गया। प्रत्येक गाँव से पाँच परिवारों का चयन किया गया। घर-घर गोबरगैस प्लांट लगवाए गए, जैविक खेती, गोमूत्र सेवन एवं दैनंदिन कार्यों में गोबर-गोमूत्र के उपयोग की विधि सिखाई गई। इन सबके चमत्कारिक परिणाम मिले। मात्र 6 माह में हमें विश्वास हो गया कि यह प्रयोग सब दृष्टि से सफल है। पहले जो किसान दूध न देने वाला एक भी गोवंश नहीं रखना चाहता था वो अब चार-चार गोवंश पाल रहा है। प्रयोग की सफलता से प्रेरित होकर इसके विस्तार हेतु प्रशिक्षण वर्गों के माध्यम से कार्यकर्ता निर्माण की योजना बनी। इस विषय को भारत के प्रत्येक गाँव तक पहुँचाने के लिए प्रशिक्षण वर्ग ही सरलतम एवं शीघ्रतम मार्ग है।

फार्मर्स क्लब और सेल्फ हेल्प ग्रुप : पहला पाँच दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग 1 दिसम्बर 2017 को पश्चिमी मेदिनीपुर जिले के पाथरहुड़ी गाँव में आयोजित हुआ। ये वर्ग गाँव-गाँव जाकर लगाये जाते हैं जिनमें आस-पास के 8-10 गाँवों से फार्मर्स क्लब और सेल्फ हेल्प ग्रुप के 2-2 सदस्यों को प्रशिक्षण दिया जाता है। गत **2** वर्षों में कुल **31** वर्ग हुए जिनमें **450** गाँवों से आये **706** कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया जो प्रशिक्षण से लौटकर अपने-अपने समूह के अन्य सदस्यों को यह सारा विषय सिखाते हैं। वर्तमान में 5 से अधिक प्रशिक्षण वर्ग प्रतिमाह लग रहे हैं। **300** से अधिक गाँवों में प्रशिक्षित कार्यकर्ता सक्रिय हैं। प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की **मासिक चिंतन बैठक** होती है जिसमें कार्य-प्रगति पर चिंतन एवं चर्चा होती है। शहर के कार्यकर्ता भी नियमित गाँवों में जाकर गाँव वालों से मिलते हैं और कार्यों की समीक्षा करते हैं। कार्य में निरंतर सुधार और विस्तार के उद्देश्य से शहर के कार्यकर्ताओं की भी मासिक चिंतन बैठक होती है।

गो-ग्राम यात्रा : शहर के और लोगों को इस कार्य से जोड़ने के लिए गो-ग्राम यात्राओं का भी नियमित आयोजन किया जाता है।

गोबरगैस प्लांट : पिछले **3** वर्षों में **85** किसान परिवारों में गोबरगैस प्लांट लगे, गोबर गैस प्लांट से महिलाओं को साफ सुथरा एवं निःशुल्क ईंधन प्राप्त होने लगा। इससे उनके जीवन में सुख का अनुभव होने लगा है। गोबरगैस की स्लरी का खेती में उपयोग कर किसानों को लाभ होने लगा है।

गो-आधारित खेती : **500** से अधिक किसान जैविक खेती करने लगे, जैविक खेती में भी अच्छे परिणाम मिले। किसानों के खर्चे घटे हैं और उनकी आय में वृद्धि हुई है। आय के साथ-साथ फसल की गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है। फसलों में रोग और कीटों का आक्रमण कम हुआ है।

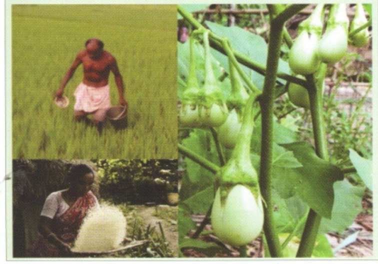

गोमूत्र सेवन से स्वास्थ्य लाभ : **3000** से अधिक ग्रामवासी गोमूत्र सेवन कर रोगमुक्त हुए। पेट से सम्बंधित बीमारियाँ जैसे गैस, एसिडिटि, कब्ज इत्यादि से छुटकारा मिला। **50** से अधिक मधुमेह रोगी, **100** से अधिक चर्म रोगी, कई धातु एवं एलर्जी रोगी पूर्ण स्वस्थ हुए। कई किसान परिवारों का चिकित्सा पर होने वाला खर्च लगभग समाप्त हो गया है। गोमूत्र सेवन से लगभग **50** से अधिक लोगों को शराब की लत से मुक्ति मिली, इसके परिणाम स्वरुप देशी शराब बनाने वाला व्यक्ति अब शराब बनाना छोड़कर, गोपालन कर, गोमूत्र अर्क बना रहा है। अब वह शराब से अधिक आमदनी गोमूत्र अर्क को बेचकर कर रहा है।

गोबर से उत्पाद : लगभग **1000** परिवारों ने बर्तन धोने के लिए डिटर्जेंट का उपयोग बंद कर, गोमय भस्म का उपयोग शुरु कर दिया है। एक महिला ने अपने अनुभव-कथन में कहा कि केमिकल डिटर्जेंट के कारण हाथ में चर्म रोग हो गया था, वो गोमय भस्म के उपयोग से एक माह में ही बिलकुल ठीक हो गया है। लगभग **1100** परिवारों में खुद से बनाया हुआ गोमय दन्तमंजन का उपयोग हो रहा है जिससे बाजार से मंजन खरीदने का खर्च भी बंद हो गया है।

गो-दान : किसान अब दूध नहीं देनेवाला गोवंश भी बेचता नहीं है। गोबर-गोमूत्र की आपूर्ति के लिए **206** गोवंश दान में दिया गया जिसमें **175 नर-गोवंश** है जो कभी दूध नहीं देगा। इनमें से **100** नर-गोवंश ऐसे हैं जिनको भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर **BSF** द्वारा तस्करी से छुड़ाया गया था और उनके आश्रय के लिए कोई स्थान नहीं था। आज इनको हमारा प्रशिक्षित किसान केवल गोबर-गोमूत्र के लिए बड़े चाव और प्यार से पाल रहा है।

गोवंश आधारित जीवन व्यवस्था

- वर्ष 2012 से, केन्द्र को तिरोडा के ग्रामीण किसानों को लाभ मिल रहा है। वर्ष 2012 से वर्ष 2019 की अवधि के दौरान, लगभग 2573 कुल किसानों ने इस संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया। अब तक केन्द्र द्वारा गरीब किसानों को कुल 467 गाय और बैल उपलब्ध कराए गए है। परिणामस्वरूप, तिरोडा के 50 गाँव के कुल 1023 किसान

जैविक कीटनाशक, गोमूत्र अर्क, निंबोली अर्क, अमृतपाणी आदि बना रहे है और अपने खेत में इसका उपयोग कर रहे है। वर्मीकम्पोस्ट बनाने की विधि को भी बढ़ा दिया है, जिसके प्रभाव से कुल 860 किसान

वर्मीकम्पोस्ट बना रहे है, अपने खेत में उपयोग कर रहे है और बेच रहे है।

जैविक खेती समय की मांग

पिछले 50 वर्षो से रासायनिक खेती से पैदा हुई खेती की चुनौतियाँ

- मौसम परिवर्तन से भारी नुकसान
- जीवांश कार्बन की कमी से भुमि की घटती उर्वरता
- घटता भूमिगत जल स्तर

गौमाता गोबर प्रोडक्ट मशीन

अनुनय इंजिनियरींग

79722 39374

Add.: Industrial Estate, Chandrapur | E-Mail.:- anunaiengg@gmail.com | Web :- www.anunaiengineering.in

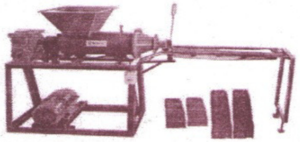

गोबर लकडी मशीन

Model	: AE-LOG-3 HP
Production Capacity	: 200 Kg/Hr.
Long Die in Square	: 3" x 3"
Long Die in Square	: 3"
Machine Cost	: 37,500 + GST

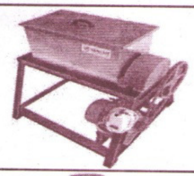

गोबर मिक्सर मशीन

Model	: AE-MIXER
Capacity	: 20Kg.
Electric Motor	: 1.5HP/1Ph
Machine Cost	: 19,000 + GST

गोबर गमला मशीन

Model	: AE-POT-MANUAL
Production Capacity	: 50 Pots/hr.
Pot Die Sizes	: 4", 6", 8"
Machine Cost	: 19,500 + GST

गोबर उपले (टिक्की) मशीन

Model	: AE-TIKKI-MANUAL
Production Capacity	: 50 Tikkis/hr.
Tikki Die Sizes	: 2.5", 3", 4", 6", 8", 10"
Machine Cost	: 19,000 + GST

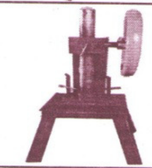

गोबर दिया मशीन

Model	: AE-DIYA-MANUAL
Production Capacity	: 600 to 700 Diya/ 8 hr.
Diya Machine Sizes	: 34"H x 18" Lx12"W
Machine Cost	: 11,500 + GST

Mahalaxmi Ent. CHD. 9860242288

धन्यवाद ....!